

रविवार 4 मई, 2025

विषय— हमेशा की सजा

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 28: 13

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उन को मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।"

उत्तरदायी अध्ययन: याकूब 1: 2-5, 13, 14, 17, 18

- ² हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो
- ³ तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
- ⁴ पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे॥
- ⁵ पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी।
- ¹³ जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।
- ¹⁴ परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंच कर, और फंस कर परीक्षा में पड़ता है।
- ¹⁷ क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।
- ¹⁸ उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 32: 1, 2, 5 (से 2nd.), 6 (से:), 9-11

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंडी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 1 क्याही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो।
- 2 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो॥
- 5 जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा; तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया॥
- 6 इस कारण हर एक भक्त तुझ से ऐसे समय में प्रार्थना करे जब कि तू मिल सकता है।
- 9 तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते, उनकी उमंग लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है, नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने के॥
- 10 दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी; परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह करुणा से घिरा रहेगा।
- 11 हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे सब सीधे मन वालों आनन्द से जयजयकार करो!

2. यिर्मयाह 18: 1-8

- 1 यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, उठ कर कुम्हार के घर जा,
- 2 और वहां मैं तुझे अपने वचन सुनवाऊंगा।
- 3 सो मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है!
- 4 और जो मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया।
- 5 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे इस्राएल के घराने,
- 6 यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाई तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसा ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो।
- 7 जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि उसे उखाड़ूंगा वा ढा दूंगा अथवा नाश करूंगा,
- 8 तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने कह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने को ठाना हो पछताऊंगा।

3. लूका 14: 3 (संकेत)

- 3 यीशु ने उत्तर दिया, ...

4. लूका 15: 11-18, 20 (लेकिन)-25, 28, 29, 31

- 11 किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।

- 12 उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी।
- 13 और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी।
- 14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।
- 15 और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा: उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा।
- 16 और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था।
- 17 जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं।
- 18 मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।
- 20 तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला: वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।
- 21 पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।
- 22 परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; फट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ।
- 23 और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनावें।
- 24 क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है: खो गया था, अब मिल गया है।
- 25 परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था: और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उस ने गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना।
- 28 यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा: परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा।
- 29 उस ने पिता को उत्तर दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।
- 31 उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।

5. 1 यूहन्ना 1: 5-9

- 5 जो समाचार हम ने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।

- 6 यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते।
- 7 पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।
- 8 यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं।
- 9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

6. इफिसियों 4: 23, 24, 31, 32

- 23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
- 24 और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है॥
- 31 सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए।
- 32 और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 405: 19 (अमर)-21

अमर मनुष्य ईश्वर की सरकार को प्रदर्शित करता है, जिसमें पाप करने की शक्ति नहीं है।

2. 372: 14-16, 26-32

जब मनुष्य क्रिश्चियन साइंस का प्रदर्शन करता है, तो वह एकदम सही होगा। वह न तो पाप कर सकता है, न पीड़ित, मामले के अधीन हो सकता है, और न ही परमेश्वर के कानून की अवज्ञा कर सकता है।

क्राइस्टियन साइंस में, सत्य का एक खंडन घातक है, जबकि सत्य का एक औचित्य है और उसने हमारे लिए जो किया है वह एक प्रभावशाली मदद है। यदि गर्व, अंधविश्वास या कोई त्रुटि प्राप्त लाभों की ईमानदार मान्यता को रोकती है, तो यह बीमार लोगों की वसूली और छात्र की सफलता में बाधा होगी।

3. 405: 5-9

क्रिश्चियन साइंस मनुष्य को भविष्यवाणियों में महारत हासिल करने के लिए आज्ञा देता है दया के साथ घृणा करने के लिए, शुद्धता के साथ वासना को जीतने के लिए, दान के साथ बदला लेने के लिए, और ईमानदारी के साथ धोखे को दूर करने के लिए।

4. 22: 20-22

प्रेम हमें प्रलोभन देने के लिए जल्दी में नहीं है, क्योंकि प्रेम का अर्थ है कि हमें कोशिश और शुद्ध करना होगा।

5. 5: 3-13, 22-16

गलत काम के लिए दुःख है, लेकिन सुधार की दिशा में एक कदम और बहुत आसान कदम है। ज्ञान द्वारा आवश्यक अगला और महान कदम हमारी ईमानदारी की परीक्षा है, - अर्थात्, सुधारा। इसके लिए हमें परिस्थितियों के तनाव में रखा गया है। प्रलोभन बोली हमें अपराध को दोहराती है, और जो किया जाता है उसके बदले में आ जाता है। इसी तरह यह हमेशा रहेगा, जब तक हम यह नहीं सीख लेते कि न्याय के कानून में कोई छूट नहीं है और हमें "पूरी तरह से" भुगतान करना होगा। जिस नाप से तुम नापते हो, "उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा" और यह भरा जाएगा "और ऊपर चल रहा होगा।"

प्रार्थना को पाप को रद्द करने के लिए स्वीकारोक्ति के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना है। इस तरह की त्रुटि सच्चे धर्म को बाधित करेगी। पाप को क्षमा कर दिया जाता है क्योंकि यह मसीह, सत्य और जीवन द्वारा नष्ट हो जाता है। यदि प्रार्थना इस विश्वास को पोषित करती है कि पाप को रद्द कर दिया गया है, और उस आदमी को केवल प्रार्थना करने से बेहतर बनाया जाता है, तो प्रार्थना एक बुराई है। वह बुरा होता है जो पाप जारी रखता है क्योंकि वह खुद को एक क्षमा के रूप में सपने देखता है।

एक प्रेषित कहता है कि ईश्वर का पुत्र [मसीह] "शैतान के कार्यों को नष्ट करने" के लिए आया था। हमें अपने ईश्वरीय उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, और सभी बुरे कार्यों, त्रुटि और रोग के विनाश की तलाश करनी चाहिए। हम पाप के कारण दंड से बच नहीं सकते। शास्त्र कहते हैं, कि यदि हम मसीह को अस्वीकार करते हैं, "तो वह भी हमें अस्वीकार करेगा।"

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है। परमेश्वर उस बुद्धि से अलग नहीं है जिसे वह श्रेष्ठ मानता है। वह जो प्रतिभा देता है, हमें उसे सुधारना चाहिए। अपने काम के लिए उससे माफी मांगना जो बुरी तरह से किया गया है या पूर्ववत् छोड़ दिया गया है, इस बेकार दलील को इंगित करता है कि क्षमा मांगने के अलावा हमारे पास कुछ भी नहीं है, और इसके बाद हम अपराध को दोहराने के लिए स्वतंत्र होंगे।

पाप के परिणाम के रूप में पीड़ित होने के लिए, पाप को नष्ट करने का साधन है। जब तक भौतिक जीवन में पाप और पाप नष्ट नहीं हो जाते, तब तक पाप का हर आनंद उसके दर्द के बराबर होगा। स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, हम होने के दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए।

6. 406: 11-18, 20 (हम)-25

अस्तित्व का विज्ञान इन्द्रियों की त्रुटियों को उजागर करता है, तथा विज्ञान की सहायता से आध्यात्मिक अनुभूति सत्य तक पहुँचती है। फिर त्रुटि गायब हो जाती है। जैसे-जैसे हम वैज्ञानिक काल के करीब पहुँचेंगे, पाप और बीमारी कम होती जाएगी और कम वास्तविक प्रतीत होने लगेगी, जिसमें नश्वर भावना वश में हो जाएगी और जो कुछ भी वास्तविक समानता के विपरीत है वह गायब हो जाएगा। नैतिक व्यक्ति को इस बात का भय नहीं रहता कि वह हत्या कर देगा, और उसे बीमारी के प्रश्न पर भी उतना ही निर्भय होना चाहिए।

हम, और अंत में, सत्य की सर्वोच्चता की हर दिशा में स्वयं को लाभ पहुँचाने के लिए उठ सकते हैं, मृत्यु पर जीवन, और बुराई पर अच्छाई, और यह विकास तब तक चलेगा जब तक हम भगवान के विचार की पूर्णता तक नहीं पहुँच जाते, और कोई और डर नहीं कि हम बीमार होंगे और मर जाएंगे।

7. 407: 11-16

यहाँ क्राइस्टियन साइंस, प्रभु की रामबाण औषधि है, जो नश्वर मन की कमजोरी को ताकत देती है, - अमर और सर्वशक्तिमान दिमाग से ताकत, - और आध्यात्मिकता और खुद को मनुष्य से ऊपर उठाकर मानवता को शुद्ध इच्छाओं में, और यहां तक कि मनुष्य के लिए भी।

8. 253: 18-28, 32-2

यदि आप जानबूझकर गलत में विश्वास करते हैं और अभ्यास करते हैं, तो आप तुरंत अपना पाठ्यक्रम बदल सकते हैं और सही कर सकते हैं। पदार्थ पाप या बीमारी के खिलाफ सही प्रयासों के लिए कोई विरोध नहीं कर सकता, क्योंकि यह जड़ता, नासमझी है। इसके अलावा, यदि आप अपने आप को रोगग्रस्त मानते हैं, तो आप शरीर से बाधा के बिना इस गलत विश्वास और कार्रवाई को बदल सकते हैं।

पाप, बीमारी, या मृत्यु के लिए किसी भी आवश्यक आवश्यकता पर विश्वास नहीं करना, जानना (जैसा कि आप जानना चाहते हैं) कि भगवान को कभी भी एक तथाकथित भौतिक कानून के लिए आज्ञाकारिता की आवश्यकता नहीं होती है, ऐसा कोई कानून मौजूद नहीं है।

यह दिव्य मांग, “इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो” वैज्ञानिक है, और पूर्णता की ओर ले जाने वाले मानव पदचिह्न अपरिहार्य हैं।

9. 403: 14-23

आप स्थिति को आज्ञा देते हैं यदि आप समझते हैं कि नश्वर अस्तित्व आत्म-धोखे की स्थिति है न कि सत्य होने की। नश्वर मन लगातार नश्वर शरीर पर गलत विचारों के परिणाम उत्पन्न कर रहा है; और यह तब तक करना जारी रखेगा, जब तक कि नश्वर त्रुटि सत्य द्वारा अपनी काल्पनिक शक्तियों से वंचित न हो, जो नश्वर भ्रम के गॉसमेर वेब को मिटा देता है। सबसे ईसाई राज्य, एक परिमित और आध्यात्मिक समझ है और यह बीमार को ठीक करने के लिए सबसे उपयुक्त है।

10. 402: 8-12

वह समय निकट आता है जब नश्वर मन अपने भौतिक, संरचनात्मक और भौतिक आधार को त्याग देगा, जब विज्ञान में अमर मन और उसके गठन को पकड़ लिया जाएगा, और भौतिक विश्वास आध्यात्मिक तथ्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

11. 248: 26-32

हमें विचार में आदर्श मॉडल बनाना चाहिए और उन्हें लगातार देखना चाहिए, या हम उन्हें भव्य और महान जीवन में कभी नहीं उकेरेंगे। निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वान्नी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6